DR. INDRASEN SINGH

29.04.2020 1

द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की भूमिका
(Role of Japan in the Second World War)

प्रथम विश्व युद्ध के समाप्ति के बाद शान्ति सम्मेलन के दौरान की गई वर्साय की संधि (Treaty of Versailles) को विद्वानों ने एकपक्षीय, अपमानजनक, प्रतिशोधात्मक और कठोर शर्तों वाली सन्धि कह कर इसकी आलोचना की है। कुछ विद्वानों का मानना है कि वर्साय की सन्धि में द्वितीय विश्व युद्ध के कीटाणु विद्यमान थे। मार्शल फाश ने भविष्यवाणी किया था कि यह सन्धि नहीं थी बल्कि बीस वर्ष के लिये युद्ध विराम था। (Marshall Fach was prophesied that it was not a treaty but a truce for twenty years) उसकी भविष्यवाणी पूर्णत: सत्य सिद्ध हुई और पेरिस सम्मेलन के ठीक बीस वर्ष बाद 1939 ई० में एक बार पुन: विश्व युद्ध की ज्वाला धधक उठी। जर्मनी द्वारा पोलैण्ड पर किया गया आक्रमण युद्ध का तात्कालिक कारण सिद्ध हुआ।

1939 ई० में विभिन्न देशों की तानाशाही हुकूमत अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई थी। राजनीतिक वातावरण दूषित हो चुका था। साम्राज्यवाद की स्थापना एवं उसकी सुरक्षा की दृष्टिकोण से की गई गुप्त सन्धियों ने जो द्वेष और अविश्वास का बीजारोपण किया था उसका अन्त केवल युद्ध था। अत: द्वितीय विश्व युद्ध आकस्मिक घटना नहीं थी अपितु परिस्थितियों एवं कारणों की परिणति (परिणाम) थी।

जापान की स्थिति (Situation of Japan):-

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले ही जापान सोवियत संघ (रूस) को अपना प्रबल विरोधी मानता था। जापान अपनी सोवियत संघ विरोधी भावना के कारण ही 1936 ई० में जर्मनी और 1937 ई० में इटली से संधि की थी और 1939 ई० में विश्व युद्ध के प्रारम्भ के बाद 1940 ई० में जापान, इटली और जर्मनी ने एक अन्य त्रिराज्य सन्धि पर भी हस्ताक्षर किये थे। इस सन्धि के अनुसार जर्मनी व इटली ने पूर्वी एशिया में जापान के आधिपत्य को मान्यता प्रदान कर दी। 1941 ई० में जापान के विदेश मन्त्री मास्को जाकर सोवियत-जापानी तटस्थता सन्धि कर ली। इसके अनुसार दोनों देशों ने एक दूसरे को वचन दिया कि यदि उनमें से किसी के साथ कोई तीसरा देश युद्ध करेगा, तो दूसरा मित्र तटस्थ (Neutral) रहेगा। साथ ही इस सन्धि के अनुसार रूस ने मंचूकुओं (नवगठित राज्य) पर जापानी अधिकार को और जापान ने मंगोलिया पर रूसी अधिकार को मान्यता प्रदान की।

(शेष नोट कल उपलब्ध कराया जायेगा)

अमरीका के साथ जापान के सम्बन्ध (Relations of Japan with America):-
22 जून, 1941 ई० को जर्मनी ने जापान से बिना शर्त वार्ता किये सोवियत संघ के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी, जिससे जापान अत्यधिक नाराज हुआ और वह जर्मनी से हटकर अमरीका की ओर झुकने लगा और अमरीका को युद्ध की स्थिति में अपनी तटस्थता का आश्वासन भी देना चाहता था। तत्कालीन राष्ट्रपति रूजवेल्ट (Roozvelt) भी जापान से वार्ता के लिए तैयार हो गया, किन्तु दोनों के मध्य कार्डल हल (Kardal Hal) के विरोध के कारण समझौता नहीं हो सका। जापान का प्रधान मन्त्री टोजो (Tojo) अमरीका के साथ 1941 ई० की स्थिति पर लौटने को तैयार था, परन्तु अमरीका ने यह शर्त भी स्वीकार नहीं की और अपनी ओर से दस माँगों वाला एक पत्र जापान को भेजा, जिसका अर्थ जापान को चीन और मंचूरिया से हटाना था, अतः कोई निष्कर्ष नहीं निकल सका।

पर्लहार्बर पर आक्रमण (Attack on Pearl Harbour):-
अमरीका और जापान के बीच परस्पर वार्ता टूटने पर दोनों देशों के मध्य तनाव बढ़ता गया। जापान अपनी एक सेना हिन्द-चीन (Indo-China) में भेज दिया। जापान के इस कदम से अमरीका अत्यन्त नाराज हुआ। अमरीका ने जापान के साथ चल रहे व्यापार पर नियन्त्रण लगा दिया तथा अमरीका में स्थित जापानी सम्पत्ति का भी अधिग्रहण कर लिया, इससे जापान की अत्यधिक हानि हुई और वह बदला लेने के लिए अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। दोनों देशों में निरन्तर बढ़ते हुए विरोध के बाद भी अमरीका अभी युद्ध में प्रवेश नहीं करना चाहता था, क्योंकि वह उसके लिए पूरी तरह से तैयार नहीं था। जापान इस स्थिति का लाभ उठाना चाहता था अतः उसने 7 दिसम्बर, 1941 ई० को एका एक पर्ल हार्बर पर आक्रमण कर दिया जो हवाई द्वीप समूह में अमरीका का नौसेना का प्रमुख केन्द्र था। अचानक जापानी आक्रमण से अमरीका को पर्याप्त हानि हुई और उसके कई जहाज व हवाई जहाज नष्ट कर दिये गए। परिणामस्वरूप दोनों देश एक दूसरे के विरुद्ध द्वितीय विश्व युद्ध में कूद पड़े।

जापान का दक्षिण पूर्वी एशिया में विस्तार (Expansion of Japan in South East Asia):-
जापान युद्ध में शामिल होने के साथ ही वह अपना विस्तार तेजी से दक्षिण पूर्वी एशिया में करना शुरू किया। उसने फिलिपाइन्स पर आक्रमण करके अपना अधिकार स्थापित कर लिया। 25 दिसम्बर 1941 ई० को उसने हाँगकाँग पर अधिकार कर लिया।

(शेष नोट कल उपलब्ध कराया जाएगा)

इस स्थान पर लगभग सौ वर्ष से ब्रिटेन का अधिकार था। इसके बाद जापान ने मलाया प्रायद्वीप और सिंगापुर को भी अपने अधिकार कर लिया। जापान ने बर्मा पर भी अधिकार कर लिया। इस प्रकार जून 1942 ई० तक जापान ने दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। जापान ने आंग्ल-अमरीकी मोर्चे की संचार व्यवस्था को भी नष्ट कर दिया इस प्रकार कुछ माह में जापान का साम्राज्य उत्तर में सखालिन से दक्षिण में आस्ट्रेलिया तक और पश्चिम में बर्मा तक फैल गया। जापान की इन विजयों ने पूरे विश्व को स्तब्ध कर दिया।

पूर्वी एशिया का नवीन संगठन (New Organization of East Asia):-
1942 ई० में जापान ने अपने इस विशाल साम्राज्य के संगठन की ओर ध्यान दिया और इसे 'वृहत्तर पूर्वी एशिया सह समृद्धि क्षेत्र' (Greater East Asia Co-prosperity Region) नाम दिया। जापान ने समस्त विजित देशों से सन्धियाँ की और स्वतन्त्र सरकारों की स्थापना की, किन्तु सभी पर पूर्ण प्रभाव बनाये रखा। टोकियो में वृहत्तर पूर्वी एशिया मन्त्रालय की स्थापना की। जापान ने 1943 ई में वृहत्तर पूर्व एशियाई सम्मेलन का आयोजन भी किया जिसमें जापान ने पूर्वी एशिया से पश्चिम का अधिकार समाप्त करने की घोषणा की।

युद्ध की दिशा में परिवर्तन (Change in the direction of War):-
1942 ई० के बाद युद्ध का दृश्य बदलने लगा और जापानी सेना जो निरन्तर विजय प्राप्त कर रही थी उसे पराजय का सामना करना पड़ा। मिडवे (Midway) की समुद्री लड़ाई में जापान को हानि उठानी पड़ी। न्यूगिनी (Newguni) में जापान को मुँह की खानी पड़ी। सोलोमन के द्वीपों (Islands of Soloman) ने भी जापान से स्वतन्त्र हो गये। 1943 ई० के बाद दक्षिण-पश्चिम प्रशान्त में भी जापान की रफ्तार रुक गई।

मित्र देशों ने युद्ध को यथाशीघ्र समाप्त करना चाहते थे। अमरीका, ब्रिटेन और रूस ने मास्को में एक सम्मेलन आयोजित किया जिसमें तीनों ने यह तय किया कि जब तक जापान 'बिना शर्त समर्पण' नहीं कर देता है तब तक उसके विरुद्ध युद्ध जारी रखा जाये। इस समय रूस भी युद्ध में जापान के विरुद्ध शामिल हो गया।

मित्र देशों की सेनाओं को युद्ध में सफलताएँ प्राप्त होने लगी थी। चीन-बर्मा-भारत मोर्चे पर ब्रिटेन की सेना सफल रही। अमरीका के जनरल मैक आर्थर (Mac Arthur) ने फिलीपाइन्स पर अधिकार कर लिया। आस्ट्रेलिया की सेना ने बोर्नियो के तेल भण्डार के प्रदेश पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार जापानी सेना की शक्ति का ह्रास होने लगा।

अमरीका द्वारा परमाणु बम का प्रयोग (Use of Atom Bomb by America) :-
मित्र देशों ने जापान पर 1944 ई० उत्तरार्द्ध में अपने हवाई आक्रमण तेज कर दिये। मित्र राज्यों द्वारा टोकियो पर मार्च 1945 में भीषण बमबारी की गई जिसमें लाखों लोगों की जानें गई तथा टोक्यो शहर राख का ढ़ेर बन गया। जापान की सेना की शक्ति 1 अगस्त 1945 तक पूरी तरह बर्बाद हो गई। रेलमार्ग छिन्न भिन्न होगये, तेल भण्डार खाली हो गये, कोयले का अभाव हो गया और उद्योग बन्द हो गये फिर भी जापानियों के युद्ध लड़ने के उत्साह में कमी नहीं आई।

अन्त में अमरीका सहित मित्र देशों ने पोट्सडम (Potsdam) सम्मेलन में जापान को बिना शर्त युद्ध बन्द करने का एक अल्टीमेटम दिया। जापान ने मित्र राज्यों की धमकी का कोई महत्व नहीं दिया। अतः अमरीका ने युद्ध समाप्त करने के लिये जापान के हिरोशिमा शहर पर 6 अगस्त 1945 को प्रथम बम का प्रयोग किया। तीन दिन बाद उसने पुनः जापान के नागासाकी शहर पर दूसरे बम का प्रयोग किया। इन दोनों बमों ने जापान की अपार जान-माल की हानि पहुँचाया जिससे बाध्य होकर जापान बिना शर्त समर्पण कर दिया। इस प्रकार युद्ध के अन्त के साथ-साथ जापानी साम्राज्यवादी नीति का भी अन्त हो गया।

परमाणु बम के प्रयोग का औचित्य (Justification of Use of Atom Bomb) :-
परमाणु बम के प्रयोग को लेकर इतिहासकारों में परस्पर मत भेद है। कुछ का मानना है कि युद्ध की समाप्ति के लिए बम का प्रहार जापान पर करना आवश्यक था क्योंकि ऐसा न करने से जापान युद्ध जारी रखता तथा युद्ध लम्बा चलता। ऐसी स्थिति में जो जन-धन की हानि होती वह, शायद परमाणु बम से होने वाली हानि से अधिक होती और सभी देश अधिक समय तक तनावग्रस्त रहते। परन्तु कुछ अन्य विद्वानों का मानना है कि अमरीका का जापान पर परमाणु बम का प्रयोग करना उसका अमानवीय कृत था जिसमें अनेक निर्दोष लोग मारे गये और अपार सम्पत्ति नष्ट हो गई। अतः मानवीय दृष्टि से यह कदम अनुचित था।